॥ ओ३म् ॥

॥ अथ नित्यसन्ध्यायज्ञोपासनविधिः ॥

विधिः- सदा स्त्री-पुरुष १० दश बजे शयन और रात्रि के पहिले प्रहर वा ४ बजे उठके प्रथम हृदय में परमेश्वर का चिन्तन करके धर्म का अर्थ का विचार करना और धर्म और अर्थ के अनुष्ठान वा उद्योग करने में यदि कभी पीड़ा भी हो तथापि धर्मयुक्त पुरुषार्थ को कभी न छोड़ना चाहिए, किन्तु सदा शरीर और आत्मा की रक्षा के लिए युक्त आहार-विहार, औषध सेवन, सुपथ्य आदि से निरन्तर उद्योग करके व्यावहारिक और पारमार्थिक कर्त्तव्य कर्म की सिद्धिके लिये ईश्वरोपासना भी करनी कि जिस परमेश्वर की कृपा दृष्टि और सहाय से महाकठिन कार्य भी सुगमता से सिद्ध हो सके। इसके लिये निम्नलिखित मन्त्रों से ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिये-

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम॥१॥
प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह॥२॥
भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम॥३॥
उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उतमध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम॥४॥
भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुरएता भवेह॥५॥

- ऋ.मं.७/सू.४१/मं.१-५॥

इसी प्रकार परमेश्वर की प्रार्थना उपासना करनी। तत्पश्चात् शौच, दन्तधावन, मुखप्रक्षालन करके स्नान करें। सन्ध्योपासनादि नित्य कर्म नीचे लिखे प्रमाणे यथाविधि उचित समय में किया करें।

प्रथम शरीर शुद्धि अर्थात् स्नान पर्यन्त कर्म करके सन्ध्योपासना का आरम्भ करें। (सं०वि०गृ०प्र०)

नित्यसन्ध्यायज्ञोपासनविधिः

प्रारम्भ में सङ्कल्पोच्चारण करें।

ओं तत् सत् श्री ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्द्धे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे ....सृष्टि संवत्सरे.........वैक्रमाब्दे............... तत्र नाम संवत्सरे..............अयने ....ऋतौ...........मासे.........पक्षे .... तिथौ........... दिने..............नक्षत्रे.............. लग्ने............. मुहूर्ते ....नगरे अत्र इदम् नित्यसंध्या यज्ञोपासनादि कर्म अहम् करिष्ये।

(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका। वेदोत्पत्ति विषय विचार)

(फिर) दक्षिण हस्त में जल लेके:-

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥ १ ॥
ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥ २ ॥
ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥ ३ ॥

(आश्वलायन गृ० सूत्र अध्याय १। कण्डिका २४ सूक्त, १२, २१, २२) इन तीन मन्त्रों में से एक-एक से एक एक आचमन करे।

(संस्कार विधि गृ०प्र०)

"आचमन" उतने जल को हथेली में लेके उसके मूल और मध्यदेश में ओष्ठ लगा के करे कि वह जल कण्ठ के नीचे हृदय तक पहुंचे न उससे अधिक न न्यून।

(सत्या०प्र० ३ समु०)

पश्चात् दानों हाथ धो, कान, आँख, नासिका आदि का शुद्ध जल से स्पर्श करके शुद्ध देश, पवित्रासन पर जिधर की ओर का वायु हो उधर को मुख करके, नाभि के नीचे से मूलेन्द्रिय को ऊपर संकोच करके हृदय के वायु को बल से बाहर निकाल के यथाशक्ति रोके, पश्चात् धीरे-धीरे भीतर लेके भीतर थोड़ा सा रोके। यह एक प्राणायाम हुआ। इसी प्रकार कम से कम तीन प्राणायाम करे। नासिका को हाथ से न पकड़े। (सं० वि० गृ० प्र०)

और मन में (ओ३म्) इसका जाप करता जाय। (स० प्र० ३ स०)

इसी नाम (ओ३म्) का जप अर्थात् स्मरण करना चाहिए।

॥ ओ३म् ॥

(ऋ० भा० भू० उपासना० प्रक०)

इसके अनन्तर गायत्री मन्त्र से शिखा को बांध कर रक्षा करे।

॥ अथ गायत्री मन्त्रः ॥

ओं३म् (य० अ० ४०। मं० १७) **भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥**

यजु० अ० ३६। मं० ३॥

(प० म० य० वि०)

इस समय (उपरोक्त मन्त्र से) परमेश्वर की स्तुति प्रार्थनोपसना हृदय में करके:-

॥ आचमनमन्त्रः ॥

ओं शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः॥

-यजु० अ० ३६। मं० १२॥

इस मन्त्र का एक बार पढ़ के एक, दो और तीन आचमन करे। पश्चात् पात्र में से मध्यमा अनामिका अंगुलियों से जल-स्पर्श करके प्रथम दक्षिण में पश्चात् वाम पार्श्व निम्नलिखित मन्त्रों से स्पर्श करें-

॥ अथेन्द्रियस्पर्शमन्त्रः ॥

ओं वाक् वाक् ॥ इस मन्त्र से मुख का दक्षिण और वामपार्श्व।

ओं प्राणः प्राणः ॥ इससे दक्षिण और वाम नासिका के छिद्र।

ओं चक्षु चक्षुः ॥ इससे दक्षिण और वाम नेत्र।

ओं श्रोत्रं श्रोत्रम्। इससे दक्षिण और वाम श्रोत्र।

ओं नाभिः ॥ इससे नाभि।

ओं हृदयम् ॥ इससे हृदय।

ओं कण्ठः ॥ इससे कण्ठ।

ओं शिर:॥ इससे मस्तक।

ओं बाहुभ्यां यशो बलम्॥ इससे दोनों भुजाओं के मूल स्कन्ध।

ओं करतलकरपृष्ठे॥ इससे दोनों हाथों के ऊपर तले स्पर्श करके मार्जन करे।

॥ अथेश्वरप्रार्थनापूर्वक मार्जन मन्त्रा: ॥

ओं भू: पुनातु शिरसि॥ इस मन्त्र से शिर पर।

ओं भुव: पुनातु नेत्रयो:॥ इस मन्त्र से दोनों नेत्रों पर।

ओं स्व: पुनातु कण्ठे॥ इस मन्त्र से कण्ठ पर।

ओं मह: पुनातु हृदये॥ इस मन्त्र से हृदय पर।

ओं जन: पुनातु नाभ्याम्॥ इस मन्त्र से नाभि पर।

ओं तप: पुनातु पादयो:॥ इससे दोनों पगों पर।

ओं सत्यं पुनातु पुन: शिरसि॥ इससे पुन: मस्तक पर।

ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र॥ इस मन्त्र से सब अङ्गों पर छींटा देवे।

पुन: पूर्वोक्त रीति से प्राणायाम की क्रिया करता जावे और नीचे लिखे मन्त्र का जप भी करता जाय:-

॥ अथ प्राणायाममंत्रा: ॥

ओं भू:। ओं भुव:। ओं स्व:। ओं मह:। ओं जन:। ओं तप:। ओं सत्यम्॥

॥ तैत्ति० प्रपा० १०। अनु०२७॥

इसी रीति से कम से कम तीन और अधिक से अधिक २१ प्राणायाम करे।

तत्पश्चात् सृष्टिकर्त्ता परमात्मा और सृष्टिक्रम का विचार नीचे लिखित मन्त्रों से करे। और जगदीश्वर को सर्वव्यापक न्यायकारी सर्वत्र, सर्वदा सब जीवों के कर्मों के द्रष्टा को निश्चित मान के पाप की ओर अपने आत्मा और मन को कभी न जाने देवे, किन्तु सदा धर्मयुक्त कर्मों में वर्त्तमान रक्खे-

(सं० वि० गृ० प्र०)

॥ ओ३म् ॥

॥ अथाघमर्षणमन्त्राः ॥

ओम् ऋतंच सत्यंचाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽअर्णवः॥१॥
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत।
अहोरात्राणि विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी॥२॥
सूर्य्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः॥३॥

ऋ० अ० ८ अ० ८ व० ४८ मं० १-३॥

(पुनः) शन्नो देवी, इस मन्त्र से तीन अचमन करे। तदनन्तर गायत्रयादि मन्त्रों के अर्थविचारपूर्वक परमेश्वर की स्तुति, अर्थात् परमेश्वर के गुण और उपकार का ध्यान कर, पश्चात् प्रार्थना करे। अर्थात् सब उत्तम कामों में ईश्वर का सहाय चाहे और सदा पश्यात्ताप करे कि मनुष्य शरीर धारण करके हम लोगों से जगत् का उपकार कुछ भी नहीं बनता। जैसा कि ईश्वर ने सब पदार्थों की उत्पत्ति करके सब जगत् का उपकार किया है वैसे हम लोग भी सब का उपकार करें। इस काम में परमेश्वर हमको सहाय करे कि जिससे हम लोग सबको सदा सुख देते रहें॥

तदनन्तर ईश्वर की उपासना करें, सो दो प्रकार की है-

एक सगुण और दूसरी निर्गुण। जैसे ईश्वर सर्वशक्तिमान, दयालु, न्यायकारी, चेतन, अन्तर्यामी, मङ्गलमय, शुद्ध, सनातन, आनन्दस्वरूप है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का देने वाला पिता, माता, बन्धु राजा और न्यायाधीश है इत्यादि। ईश्वर के गुण विचारपूर्वक उपासना करने का नाम सगुणोपासना है तथा निर्गुणोपासना इस प्रकार से करनी चाहिये कि ईश्वर अनादि, अनन्त, अजन्मा, अमृत्यु, निराकार, निर्विकार, जिसमें रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द, अन्याय, अधर्म, रोग, अज्ञान नहीं है। जिसका परिमाण बन्धन इन्द्रियों से दर्शन नहीं होता। जो ह्रस्व, दीर्घ और शोकातुर कभी नहीं होते इत्यादि, जो जगत् के गुणों से ईश्वर को अलग जान के ध्यान करना, वह निर्गुणोपासना कहाती है।

इस प्रकार प्राणायाम करके अर्थात् भीतर के वायु को बल से नासिका के द्वारा बाहर फेंक के, यथाशक्ति बाहर ही रोक के, पुनः धीरे-धीरे भीतर लेके पुनः बल से बाहर फेंक के रोकने से मन और आत्मा को स्थिर करके, आत्मा के बीच में जो अन्तर्यामी रूप से ज्ञान और आनन्दस्वरूप व्यापक परमेश्वर है, उसमें अपने आपको मग्न करके, अत्यन्त आनन्दित होना चाहिए। जैसा गोताखोर जल में डुबकी मार के शुद्ध होके बाहर आता है, वैसे ही सब जीव लोग अपनी आत्माओं को शुद्ध ज्ञान, आनन्दस्वरूप, व्यापक परमेश्वर में मग्न करके नित्य शुद्ध करें।*

(पं० म० य० वि०)

फिर निम्नलिखित मन्त्रों से सर्वव्यापक परमात्मा की स्तुति प्रार्थना करे।

नोट :-यह प्रार्थना उपासना इस प्रकार करें-

हे ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप प्रभो! आप सब प्रकाशकों के प्रकाशक वरण करने योग्य हैं। आप शुद्ध विज्ञानस्वरूप सब सुखों के देने वाले प्रभो हम आपको धारण करते हैं। इसलिए कि आप हमारी बुद्धियों को ज्ञान कर्म और उपासना के प्रेरणात्मक मार्ग की ओर प्रेरित कीजिए।

प्रभो! आप हमें लौकिक यश एवं पूर्णानन्द मोक्ष की प्राप्ति के लिए आप हमारे ऊपर चारों ओर से निरन्तर सुख की वृष्टि करते रहें। आप हमारे वाक् प्राण चक्षुः श्रोत्र नाभि हृदय कण्ठ शिर बाहु करतल इत्यादि सभी अंङ्गों को यशवान् और बलवान् बनाइये। इन सभी अंङ्ग प्रत्यङ्गों में पवित्रता प्रदान कीजिए। हे महान् प्रभो आप पृथ्वी, अन्तरिक्ष एवम् द्युलोक में व्याप्त है। आपने सर्वप्रथम वेद बनाये प्रकृति के अटल नियम बनाये, जल भरे समुद्र बनाये इसके पश्चात् दिन और रात के संयोग से समय का विभाजन किया यह सब आपने सहज स्वभाव से ही बना दिया। और हे प्रभो! आपने जैसे पूर्व कल्प में थे वैसे ही सूर्य चन्द्रमा नक्षत्र तारे इत्यादि सभी प्राणी मात्र के सुख के निमित्त बनाये। आप अजन्मा हैं, अविनाशी हैं निराकार हैं, निर्विकार हैं। हे प्रभो! आपने हमारा और इस संसार का बहुत ही उपकार किया है हमसे कुछ उपकार नहीं हो पा रहा है कृपया हमें भी वह शक्ति प्रदान कीजिए कि जिससे हम भी कुछ उपकार कर सकें।

॥ ओ३म् ॥

(सं० वि० गृ० प्र०)

॥ अथ मनसापरिक्रमा मन्त्राः ॥

ओम् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥१॥
दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥२॥
प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥३॥
उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥४॥
ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥५॥
ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥६॥

–अथर्व० कां० ३ सू. २७। मंत्र १-६

नित्यसन्ध्यायज्ञोपासनविधिः

इन मन्त्रों को पढ़ते जाना और अपने मन में चारों ओर बाहर भीतर परमात्मा को पूर्ण जान कर निर्भय, निश्शङ्क, उत्साही, आनन्दित, पुरुषार्थी रहना।

॥ अथोपस्थानमन्त्राः ॥

तत्पश्चात् परमात्मा का "उपस्थान" अर्थात् परमेश्वर के निकट मैं और मेरे अति निकट परमात्मा है, ऐसी बुद्धि करके करे–

ओं जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो नि दहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ १ ॥

(ऋग्० मं० १ सू० ९९ मं० १)

ओं चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षँ सूर्य्यऽआत्माजगतस्तस्थुषश्च॥ २ ॥

य०। मं० ४६॥

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सुर्य्यम्॥ ॥ य० अ० ३३। मं० ३१॥

उद्वयं तमसस्परिस्वः पश्यन्तऽउत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्य्यमगन्मज्योतिरुत्तमम्॥ ॥ यजु० अ० ३५। मं० १४॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥५॥ य० अ० ३६। मं० २४ (सं० वि० गृ० प्र०)

इसलिये प्रेम में अत्यन्त मग्न होके, अपने आत्मा और मन को परमेश्वर में जोड़ के, इन मन्त्रों से स्तुति और प्रार्थना सदा करते रहे। ॥ पं० म० य० वि० ॥

इन मन्त्रों से परमात्मा का उपस्थान करके पुनः (शन्नो देवी०)

इससे तीन आचमन करके पृष्ठ तीन में लिखे गायत्री मन्त्र का अर्थ विचारपूर्वक परमात्मा की स्तुति प्रार्थनोपासना करे। (सं० वि० गृ० प्र०)

(उपर्युक्त) नित्य कर्म को करता हुआ सावित्री अर्थात् गायत्री मन्त्र का

उच्चारण अर्थ ज्ञान और उनके अनुसार अपने चाल-चलन को करे परन्तु यह जप मन में करना उत्तम है। (सं० प्र० ३ समु०)

॥ गायत्री (गुरुमन्त्रः) ॥

ओ३म् (य० अ० ४०। मं० १७) **भूर्भुवः स्वः।**
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥ [यजु० अ० ३६। मं० ३]

॥ अथ समर्पणम् ॥

पुनः-

हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।

तत ईश्वरं नमस्कुर्यात्- तब ईश्वर को नमस्कार करे-

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च।
नमः शङ्कराय च मयस्कराय च।
नमः शिवाय च शिवतराय च॥

(पं० म० य० वि०) (यजु० अ० १६। मं० ४१)

इससे परमात्मा को नमस्कार करके (शन्नो देवी०) इस मन्त्र से तीन आचमन करके अग्निहोत्र का आरम्भ करे। (सं० वि० गृ० प्र०)

॥ इति सन्ध्योपासनाविधिः ॥

॥ अथ अग्निहोत्रम् ॥

जैसे सायं प्रातः दोनों सन्धि बेलाओं में सन्ध्योपासन करे इसी प्रकार दोनों स्त्री-पुरुष * अग्निहोत्र भी दोनों समय में नित्य किया करे।

(सं० वि० गृ० प्र०)

* किसी विशेष कारण से स्त्री वा पुरुष अग्निहोत्र के समय दोनों साथ उपस्थित न हो सकें तो एक ही स्त्री वा पुरुष दोनों की ओर का कृत्य कर लेवें अर्थात् एक-एक मंत्र को दो-दो बार पढ़ के दो-दो आहुति करे।

उसके लिए सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा वा मिट्टी का कुण्ड बनवा लेना चाहिए। जिसका परिणाम सोलह अंगुल चौड़ा और गहिरा और उसका तला चार अंगुल का लम्बा-चौड़ा रहे। एक चमसा जिसकी डंडी सोलह अंगुल और उसके अग्र भाग से अंगुठा की यव रेखा के प्रमाण से लम्बा चौड़ा आचमनी के समान बनवा लेवे। सो भी सोना, चाँदी वा पलाशादि लकड़ी का हो। एक आज्यस्थाली अर्थात् घृतादि रखने का पात्र सोना, चाँदी वा पूर्वोक्त लकड़ी का बनवा लेवे। एक जल का पात्र तथा एक चिमटा और पलाशादि की लकड़ी समिधा के लिए रख लेवे।

पुनः घृत को गर्म कर छान लेवे और एक सेर घी में एक रत्ती कस्तूरी, एक मासा केसर पीस के मिला कर उक्त पात्र के तुल्य दूसरे पात्र में रख छोड़े। जब अग्निहोत्र करे तब शुद्ध स्थान में बैठ के पूर्वोक्त सामग्री पास रख लेवे। जल के पात्र में जल और घी के पात्र में एक छटांक वा अधिक जितना सामर्थ्य हो, उतने शोधे हुए घी को निकाल कर अग्नि में तपा के सामने रख लेवे तथा चमसे को भी रख लेवे। पुनः उन्हीं पलाशादि वा चन्दनादि लकड़ियों को वेदी में रख कर, उसमें आगीधर पंखे से प्रदीप्त कर नीचे लिखे मन्त्र में से एक-एक मन्त्र से एक-एक आहुति देता जाय, प्रातःकाल वा सायंकाल में। अथवा एक समय में करे, तो सब मन्त्रों से सब आहुति किया करे। (पं० न० य० वि०)

॥ यज्ञ समिधा ॥

पलास, शमी, पीपल, बड़, गुलर, आम, बिल्व आदि की समिधा वेदी के प्रमाणे छोटी-बड़ी कटवा लेवे। परन्तु वे समिधा कीड़ा लगी, मलिन देशोत्पन्न और अपवित्र पदार्थ आदि से दूषित न हों, अच्छी प्रकार देख लेवे और चारों ओर बराबर और बीच में चुने।

॥ होम के द्रव्य चार प्रकार के ॥

(प्रथम-सुगन्धित) कस्तूरी, केसर, अगर, तगर, श्वेत चन्दन, इलायची,

॥ ओ३म् ॥

(छड़ीला मोथा) जायफल, जावित्री आदि। द्वितीय-पुष्टिकारक घृत, दूध, फल, कन्द, अन्न, चावल, गेहूं, उड़द आदि। (तीसरे-मिष्ट) शक्कर, शहद, छुहारे, दाख आदि। (चौथे-रोगनाशक) सोमलता अर्थात् गिलोय आदि औषधियाँ।

॥ यज्ञपात्र ॥

विशेष कर चाँदी, सोना अथवा काष्ठ के पात्र होने चाहिये।

(सं० वि० सा० प्र०)

पूर्वोक्त समिधा चयन वेदी में करे (करके)।

पुनः-

ओं भूर्भुवः स्वः॥ - गोभिल गृ० प्र० १। सू० ११॥

इस मन्त्र का उच्चारण करके घृत का दीपक जला, उससे कपूर में लगा, किसी एक पात्र में धर उसमें छोटी-छोटी लकड़ी लगा के यजमान उस पात्र को दोनों हाथों से उठा यदि गर्म हो तो चिमटे से पकड़कर अगले मन्त्र से आधान करे। वह मन्त्र यह है-

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे॥

(यजु० अ० ३ मं० ५)

इस मन्त्र से वदी के बीच में अग्नि को धर उस पर छोटे-छोटे काष्ठ और थोड़ा कपूर धर, अगला मन्त्र पढ़ के व्यजन (पंखा) से अग्नि को प्रदीप्त करें-

ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥

(यजु० अ० १५ मं० ५४॥

जब अग्नि समिधाओं में प्रविष्ट होने लगे तब चन्दन की अथवा ऊपर लिखित पलाशादि की तीन लकड़ी आठ-आठ अंगुल की घृत में डुबा उनमें से नीचे लिखे एक-एक मन्त्र से एक-एक समिधा को अग्नि में चढावे।

वे मन्त्र ये हैं-

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे-इदन्न मम॥ १ ॥ आश्व० १। १०। १२

इस मन्त्र से एक

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नये-इदन्नमम॥ २ ॥

इससे और-

सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे-इदन्नमम॥ ३ ॥

इस मन्त्र से अर्थात् दोनों मन्त्रों से दूसरी।

तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि।
बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा। इदमग्नयेऽङ्गिरसे- इदन्नमम॥ ४ ॥

(यजु० अ० ३ मं० १-३)

इस मन्त्र से तीसरी समिधा की आहुति देवे।

तत्पश्चात् अञ्जलि में जल लेके वेदी के पूर्व दिशा आदि चारों ओर जल छिड़कावे।

इसके ये मन्त्र हैं-

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व॥१॥ इस मन्त्र से पूर्व।
ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व॥२॥ इससे पश्चिम।
ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व॥३॥ इससे उत्तर।

(गो० गृ० अ० प्र० १ खं० ३ सू० १-३)

ओं देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु॥

॥ ओ३म् ॥

(यजु० अ० ३० मं० १।३।४)

इत्यादि ४ (चार) मन्त्रों से यथा विधि कुण्ड के चारों ओर जल प्रोक्षण करके।

पश्चात् घृतपात्र में से स्रुवा को भर अंगूठा, मध्यमा, अनामिका से स्रुवा को पकड़ के कुण्ड के पश्चिम भाग में पूर्वाभिमुख बैठ के, (आहुति करें)

(सं० वि० गृह० प्र०)

॥ आघारावाज्याहुति ॥

ओम् अग्नये स्वाहा॥ इदमग्नयेइदन्न मम॥ १ ॥

इस मन्त्र से वेदी के उत्तर भाग अग्नि में।

ओं सोमाय स्वाहा। इदं सोमायइदन्न मम॥ २ ॥

(गो० गृ० प्र०। खं० ८ सू० २४)

इस मन्त्र से वेदी के दक्षिण भाग में प्रज्वलित समिधा पर आहुति देनी तत्पश्चात्–

आज्यभागाहुति

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदम् प्रजापतयेइदन्नमम॥ ३ ॥

ओम् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदन्नमम॥ ४ ॥

इन दोनों मन्त्रों से वेदी के मध्य में दो आहुति देनी।

(उपर्युक्त) आहुति चार देके, नीचे लिखे हुए मन्त्रों से प्रातःकाल अग्निहोत्र करें:–

शाकल्य जो यथा विधि से बनाया हो सुवर्ण, चाँदी, कांसा आदि धातु के पात्र अथवा काष्ठ पात्र में वेदी के पास सुरक्षित धर आहुति करे।

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा॥ १ ॥

ओं सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा॥ २ ॥

ओं ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा॥ ३ ॥

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा॥ ४ ॥

नित्यसन्ध्यायज्ञोपासनविधि:

(प्रात:काल व सायं काल का यज्ञ) एक समय में करे तो सब मन्त्रों से सब आहुति किया करे। (पं० म० य० वि०)

नीचे लिखे हुये मन्त्र सायं काल के जानो।

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा॥ १ ॥
ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा॥ २ ॥
ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा॥ ३ ॥

(इस मन्त्र का मन में उच्चारण करके तीसरी आहुति देनी)

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या।
जुषाणोऽअग्निर्वेतु स्वाहा॥ ४ ॥ (य० अ० ३। सं० ९-१०)

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।
इदमग्नये प्राणाय-इदन्न मम॥ १ ॥
ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा।
इदम् वायवेऽपानाय इदन्न मम॥ २ ॥
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा।
इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम॥ ३ ॥

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम॥ ४ ॥
ओम् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा॥ ५ ॥
ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥ ६ ॥
(य० अ० ३२। मं० १४)

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रंतन्न आसुव स्वाहा॥ ७॥ य० अ० ३०। मं० ३॥
ओम् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम स्वाहा॥८॥

॥ ओ३म् ॥

(य० अ० ४०। मं० १६)

इन आठ मन्त्रों से एक-एक मन्त्र करके एक-एक आहुति ऐसे आठ आहुति देवे-

(सं० वि० गृ० प्र०)

इस प्रकार प्रातःकाल और सांयकाल सन्ध्योपासना के पीछे इन पूर्वोक्त मन्त्रों से होम करके अधिक होम करने की इच्छा हो वहाँ तक स्वाहा अन्त में पढ़कर गायत्री मन्त्र से होम करे।

(पं० म० य० वि०)

और जो अधिक आहुति देनी हो तो इस मन्त्र और पूर्वोक्त गायत्री मन्त्र से करे।

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।

यद् भद्रं तन्न आ सुव॥ (स० प्र० ३ स०)

पुनः निम्नलिखित मन्त्र से पूर्णाहुति करे।

स्रुवा को घृत से भर के-

ओं सर्वं वै पूर्ण ँ स्वाहा॥

इस मन्त्र से तीन पूर्णाहुति; अर्थात् एक-एक बार पढ़के एक-एक करके तीन आहुति देवे।

॥ इत्यग्निहोत्र विधिः संक्षेपतः समाप्तः॥

(सं. वि. गृ. प्र.)

॥ प्रार्थना ॥

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चो पासते।

तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥ १ ॥

(यजुः। अ० ३२ मं० १४ ॥

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। वीर्य्य मसि वीर्य्यं मयि धेहि। बलमसि बलं मयि धेहि। ओजोऽस्योजो मयि धेहि। मन्यु रसि मन्युं मयि धेहि। सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥ २ ॥

(यजुः। अ० १९ मं० ९॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ३ ॥
येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ ४ ॥
यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्नऽऋते किञ्चन कर्मक्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ ५ ॥
येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ ६ ॥
यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चित्तꣳ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ ७ ॥
सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिनऽइव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ ८ ॥

यजु० अ० ३४। मन्त्र १-६॥

अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम ॥ ९ ॥

यजु० अ० ४० मन्त्र १६

मानो महान्तमुत मानोअर्भकं मानऽउक्षन्तमुत मानऽउक्षितम्।
मानो वधीः पितरं मोत मातरं मानः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः॥

यजु० अ० १६। मन्त्र १५ ॥

असतो मा सद् गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्माऽमृतं गमयेति ॥

शतपथ ब्रा० [१४।३ ।१ ।३०]॥

(सत्या० प्र० ७ वां समुल्लास)

॥इति प्रार्थना ॥